रिकॉर्ड :– भगवान तेरे आने की देर है..... ॐ पिताश्री 16/7/63

ओम् शांति। अब यह किसको याद करते हैं? भारतवासी याद करते हैं गीता के भगवान को; परन्तु गीता का भगवान कौन था, कब आया, जिन्होंने बैठ गीता आदि बनाई है– यह भी ड्रामा अनुसार ही कहेंगे। जिन्होंने गीता बनाई, ज़रूर गीता के साथ भागवत भी बनाया होगा। इनके साथ महाभारत भी बनाया होगा। अच्छा, महाभारत बनाया होगा तो रामायण भी बनाया होगा। यह सभी मिलकर कोई ग्रुप ने बनाए हैं। भक्तिमार्ग के समय बनाए हैं। भक्ति को भी कुछ पीछे कहेंगे। भक्तिमार्ग में तो पूजा शुरू होती है। पूजा से पुजारी बने। यह अपन से बातें की जाती हैं– क्या हुआ? जिसको व्यास कहते हैं, वो तो कोई बड़ा मूर्ख देखने में आते हैं। यह परमपिता प० बैठ समझाते हैं, ज़रूर कोई मूर्ख होगा, जिसने पहले–2 तो यह भूल की है कि कृष्ण भगवानुवाच्य। फिर कृष्ण भगवानुवाच्य के साथ ज़रूर उनके चरित्र भी उसने बनाए होंगे। बाप समझाते हैं, बच्चे समझ सकते हैं ना, ज़रूर कोई बड़ा मूर्ख होगा। वो भी निमित्त बना हुआ है परमपिता प० से बेमुख करने, नहीं तो मनुष्य बेमुख कैसे बने? बनाने वाला चाहिए ना! तो सभी से बड़े मूर्ख वो है, गीता को ही खण्डन कर दिया है। अब तुम बच्चे राज्य–योग सीख रहे हो। तुम बाप से योग सीखने और ज्ञान से पद पाने यहाँ बैठे हो। तो विचार–सागर–मंथन कर निकालना चाहिए। यहाँ कितनी मूर्खता है, जिन्होंने शास्त्र बनाए हैं भक्तिमार्ग के लिए; और भक्तिमार्ग वालों ने कितना उसपर निश्चय किया है। हाँ, बरोबर गीता का भगवान कृष्ण था। अब कृष्ण का मुखड़ा तो सभी देख सकते हैं। अगर मोहनी मूर्त कृष्ण ही खुद हो, तो फिर वो एम–ऑब्जेक्ट दिखाने की क्या दरकार है। वो तो सतयुग का प्रिंस है ना! अच्छा, फिर महाभारत भी बनाया है। उसमें लिखा है कि जो युद्ध के मैदान में मरेंगे वो

स्वर्ग में जावेंगे। अब हिंसक लड़ाइयाँ तो बहुत लगती आई हैं। वो बात तो हो नहीं सकती। यह सभी विचार–सागर–मंथन करने की बातें हैं। जो विचार–सागर–मंथन करते रहेंगे, वो प्वाइंट्स निकालते–(स)मझाते रहेंगे। यह है बुद्धि के लिए खुराक। विचार–सागर–मंथन करना होता है ना। लड़ाइयाँ तो बहुत चली हैं। मुसलमान भी मरे, क्रिश्चियन्स भी मरे। लड़ाई तो सभी जगह, सभी नेशन की होती रहती है फि(र) वो सभी स्वर्ग में कैसे जा सकते! कोई आर्य समाजी, कोई बौद्धी, सभी की लड़ाई लगी है। फिर क्या सभी स्वर्ग चले जाते हैं! हाँ, बाकी सन्यासी लोग इन हिंसक लड़ाई में नहीं जाते होंगे। बाकी तो बहुत ही मुसलमान आदि लड़ाई में चले जाते हैं। तो क्या सिर्फ वो ही स्वर्ग में जाते होंगे! स्वर्ग तो सतयुग को कहा जाता है। तो यह (बड़ी) मूर्खता दिखाई पड़ती है शास्त्रों में। चरित्र कृष्ण के बनाए दिए हैं, जो हैं बिल्कुल झूठ। कौरव गवर्मेन्ट ने भी त्रिमूर्ति में तीन शेर लगाए, नीचे में लिखा है– सत्यमेव जयंती। अब उनके सामने फिर अपना शिवबाबा का त्रिमूर्ति और चक्र होना चाहिए। वास्तव में वो है असत्यमेव विनश्यन्ति। यह है ही सत्यमेव जयन्ती। तो उनके ऑपोजिट बनाना पड़े। बना सकते हैं। गवर्मेन्ट की आजकल के कायदे ऐसे हैं जो कोई भी कहे, ऐसा हुआ, तो सिवाए प्रूफ लिए, सिवाए केस उठाने, (बस) उनको जेल में ठोक देते। वास्तव में यह तो लॉ नहीं है ना! धर्मराज पास भी गर्भजेल में आत्माएँ आती हैं। तो वो सभी कराते हैं, यह भूल की है; इसलिए तुम सज़ा लायक हो। बाकी यह कौरव गवर्मेन्ट को तो कोई ने चुगली मारी। बस, बिगर जाँच ठोक देंगे जेल में। इसको कहा जाता है– अंधेरी नगरी... एक है सत्य, दूसरा है असत्य। गाया भी जाता है झूठी माया..... झूठ कब से शुरू हु(आ) है? द्वापर आदि, त्रेता की अंत से मनुष्य झूठे होने लग पड़े हैं। फिर पूजा के सामान बैठ बनाए हैं। इसमें लगा हुआ है ब्रहमा द्वारा स्थापना। किसकी? यह किसको पता नहीं है। स्थापना ज़रूर स्वर्ग की होगी। ब्रह्मा द्वारा परमपिता ज़रूर स्वर्ग ही स्थापन करेंगे, नहीं तो सहज राजयोग कैसे सिखलावे! ज़रूर (आकर) शरीर लेना पड़े। लि(खा) है, भगवान आवेगा तो ज़रूर आना चाहिए। पवित्र में पवित्र नम्बरवन है श्री कृष्ण; परन्तु वो तो है सतयुग का प्रिंस। यहाँ तो ज़रूर अपवित्र सोल ही होगी, जिसमें आना पड़े ना। कृष्ण के आगे जन्म वाली सोल होगी। उनके साथ ज़रूर और भी सीखते होंगे। उनकी वंशावली चाहिए ना! भगवान ने ही सिखलाया है। अब कृष्ण को तो भगवान कहा नहीं जा सकता, तो और फिर कोई मनुष्य को कैसे कह सकते! मनुष्य बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गए। अच्छा, ब्रह्मा भी तो सूक्ष्मवतन में रहता है। मनुष्य कुछ भी जानते नहीं; इसलिए उनको समझाना पड़ता है। ब्राह्मण तो यहाँ है। ब्राह्मण कहते हैं, हम ब्रह्मा की मुखवंशावली हैं; परन्तु ब्रह्मा कब आया, यह तो वो जानते नहीं हैं...। ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ चाहिए जो ब्राह्मण पैदा हो। तो यह सभी है विचार–सागर–मंथन कर समझाने की बातें। जब ब्रह्मा हो तब ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण वंशावली पैदा हो। बाप समझाते हैं, तुम हो सच्चे–2 ब्राह्मण। तुमको बैठ बाप योग सिखलाते हैं, वो फिर सिखलाना है, नहीं तो नॉलेज धारण न होती है। यह भी होना ही है। सभी एक समान तो हो न सके। बाप बैठ समझाते हैं, झूठ भी कितने हैं। अब लिखा है– भगवानवाच्य युद्ध के मैदान में जो मरेंगे तो स्वर्ग जावेंगे। अब वास्तव में यह है संगम की बात। युद्ध किसके साथ? वो हथियारों–पवारों की युद्ध तो चलती आई है; परन्तु उनसे स्वर्ग के द्वार तो खुलते नहीं। जब तक मैं न आऊँ तब तक कोई स्वर्ग जा न सके। मैं तो यह युद्ध सिखलाता हूँ। माया रूपी 5 विकारों पर जीत पानी है। ल०ना० माया पर जीत पहने हुए थे। वो एक/दो को यह पोइज़न नहीं पिलाते होंगे। कहते हैं, वहाँ भी बच्चे तो पैदा होंगे ना; परन्तु उन्हों को कहा ही जाता है– सम्पूर्ण निर्विकारी। तो ज़रूर सम्पूर्ण पवित्र होंगे ना! स्वर्ग में यह एक/दो पर काम–कटारी चलाने की हिंसा होती नहीं। काम–कटारी चलाना, यह हिंसा है। वहाँ बच्चे तो पैदा होंगे; परन्तु ..... सर्प–सर्पिणी नहीं कह सकते। वहाँ तो है ही सतोप्रधान, फिर सतो,रजो,तमो में आते हैं।

(अधूरी मुरली)